ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.VI/Dec 2011pp.1-4

Research Paper

निर्गुण संतो के काव्य में सामाजिक चेतना

डॉ.गिरि डि.व्ही.
हिंदी विभाग
स्वामी विवेकानंद वरिश्ठ महाविद्यालय,
मंठा, जि.जालना

प्रस्तावना

भक्तिकाल में भक्ति की धारा मुख्यतः दो रूपो में प्रवाहित हई थी निर्गुण भक्तिधारा और सगुण भक्तिधारा निर्गुण का सामान्य अर्थ निराकार ब्रम्ह से और सगुण का अर्थ साकार ब्रम्ह से लिया जाता है । दोनो धाराओं के संतों ने अपनी काव्य के माध्यम से जनता को जागृत करने का काम किया है ।

सामान्य जनता में फैला हुआ अन्धविश्वास, रूढिवादीता, बाह्याडम्बर, निराशा को अपने विचारों के माध्यम से दूर करने का प्रयास उन्होंने किया ।

निर्गुण भक्तिधारा के संत कवियों में कबीर, रैदास, दादुदयाल, नानकदेव, धर्मदास, सुन्दरदास, मलूकदास आदि संत कवियोंने उल्लेखनिय योगदान दिया ।1

कबीरदासजीने तत्कालीन समाज में व्याप्त बाह्याडम्बर, अन्धविश्वास, रुढीवादिता, रितीरिवाज, मजहब आदि का खंडन किया उनके अनुसार सत्य को समझे बिना तीर्थाटन करना, पूजा करना, पुराण, कुरान आदि की चर्चा करना केवल दिखावा मात्र है ।

'' तिरथमें तो सब पानी है डौवे नवी कछु अन्हाय देखा ।
प्रतिमा सकल तो जड है भाई बोले नही बोलाय देखा ।
कुराण पुराण सबै बात है या घटका परदा खोल देखा ।
अनुभव की बात कबीर कहै वह सब है झुठी पोल देखा ।''
2

पत्थर की पूजा करनेवाले अन्धविश्वासीयों पर व्यंग करते हुए कबीरदासजी कहते है –

'' पाहन पूजै हरि मिलै तो मै पूजूँ पहार ।
ताते यह चाकी भली पीस खाय संसार ।'' 3

कबीर दासजी कहते है जीस ईश्वर को आप इधर–उधर ढुँढ रहे है वह तो आप के पास ही है।

'' मोको कहा ढुँढे बंदे, मै तो तेरे पास में ।
ना मै मंदिर ना मै मज्जीद, ना काबे कैलास में ।''

उस ईश्वर को आप पहचान नही पार रहे, इसलिए आपको एक गुरू की आवश्यकता है, जो आपको सही मार्ग बता सके, गुरू की महत्ता उन्होंने इस प्रकार व्यक्त की –

'' गुरू गोविंद दोऊ खडे, काके लागू पाई ।
बलिहारी गुरू अपने, जिन गोविंद दियो बताई ।''

उन्हौनें जातीयता का भी विरोध किया –

'' जाती पाती पुछें न कोई ।
हरि को भजे सो हरि का होई ।''

सारी मानवजाती को कबीरदासजीने समझाना चाहा कि हिंदु, मुस्लिम, शुद्र आदि के भितर एक ही ईश्वर का निवास है, सभी मानव का शरीर एक ही प्रकार के धर्म मांस से निर्मित है अतः हम धर्म व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था के नामपर मानव – मानव में भेदभाव क्यों करे –

'' ऐसा भेद बिगबन भारी ।
वेद कतेब दीन अरु दुनिया, कौन पुरिश कौन नारी ।
एक बूंद एकै मलमूत्ता, एक चाम एक गूदा ।
एक जोती से सब उतपना, कौन ब्राम्हण कौन सूदा ।'' 4

इसप्रकार कबीर ने अपने युग में प्रचलित सभी कुरीतियों और धार्मिक पाखंण्डो, बाह्याडम्बरों को दूर करने का प्रयास किया ।

संत रैदास :–

अलग–अलग जातीयों में जन्म लेने के पश्चात भी केवल अपनी जाती के बारे में इन लोगों ने नही सोचा इन लोगों ने पुरे विश्व का कल्याण चाहा ।

संत रैदास लोककल्याण की भावना मन में रखकर ही साधना में लीन होना चाहते थे । वे उस व्यक्तिकों ही साधु मानने को तत्पर थें जिनके कर्मो द्वारा समाज का कल्याण हो –

'' सब सुख पावै जासु तै, सो हरि जू के दास ।
कोऊ दुःख पावै जासु तै, सो न दास हरिदास ।'' 5

संत रैदास को तीर्थ व्रत आदिमें विश्वास नही था । उनका कहना था जब तक सत्य का मर्म ज्ञात ना हो जाए जप, तप, पूजा सब कुछ भ्रम मात्र है ।

'' भाई रे मरम भगति सुजान, जो कौ सांच सूनहि पहिचान ।
भरम नाचन, भरम गावन, भरम जप तप दान ।
भरम सेवा, भरम पूजा, सूँ पहिचान ।'' 6

तत्कालीन समाज में चले आ रहे हिन्दु–मुस्लिम समाज मतभेद एवं संघर्श को रैदास अच्छी दृश्टीसे नही देखते थे । उन्हौंने दोनो ही धर्मों में तथा उनके इश्ट ईश्वर और करीम में समता मानकर पारस्पारिक प्रेम एवं सौहार्द का संदेश देते हुए कहा –

'' कृश्णा करीम राम हरि राघव, जब लगि एक न पेखा ।
वेद कतेब कुरान पुरानन, सहज एक नही देखा ।'' 7

इस प्रकार हम देखते है कि संत रैदास के काव्य में भी समाज को प्रगति के पथपर अग्रेसर करने के तत्व विद्यमान है । डॉ. योगींद्र सिंह के अनुसार, संत रैदास ने तत्कालीन समाज की परिस्थितीयों को आत्मसात किया, उनको समझा और अपनी वाणी में उन समस्याओं का एक व्यवहारिक समाधान उस काल के सर्वश्रेश्ठ साधन धर्म के द्वारा दिया । वे एक आदर्श भक्त एवं विचारक के साथ साथ तत्कालीन समाज के एक बहुत बडे सुधारक भी थे, जिनकी वाणीने समाज को तत्कालीन युग में एक समाधानपूर्ण विचारधारा दी थी ।8

संत दादु दयाल :–

धर्म तथा जाति के भेदभाव का खण्डन कर सांस्कृतिक आधार पर सब में एक–सुत्रता उत्पन्न करनेवालों में दादू दयाल का नाम उल्लेखनीय है ।

दादू की वाणी में भी निर्गुण उपासना, जाति–पाँति का निराकारण और हिन्दू–मुस्लिम एकता के भाव पाए जाते है । संत जीवन व्यतीत करने के कारण वे सर्वज्ञ शांति तथा प्रेम का प्रसार देखना चाहते थे । उन्हें भेदभाव से घृणा थी । इसलिए उन्हौंने भक्ति के मार्ग में वर्ग अथवा जातीय भावना आदि का खण्डन करते हुए तथा धार्मिक एकता का प्रतिपादन करते हुए कहा –

'' सब घट देख्या सोधि कर दूजा नाही आन ।
सब घट एकें आत्मा, क्या हिन्दू मुसलमान ।'' 9

ईश्वर को प्राप्त करने के लिए बाह्य साज सज्जा की आवश्यकता नही होती, इसलिए भेशादि की व्यर्थता बताते हुए वे कहते है –

'' सब दिखावै आपकूं , नाना भेश बनाई
जहाँ आपा मेटन हरि भजन तेहि दिसि कोइ न जाइ ।'' 10

उनका कहना है कि हिन्दू–मुस्लिम तो एक शरीर के विभिन्न अंग है, अतः एक ही है –

'' दादू दोनो भाई हाथपग, दोनो भाई जान ।
दोनो भाई नैन है, हिन्दू मूसलमान ।'' 11

इस प्रकार जाती भेद में उलझी हुई जनता को यथार्थ का ज्ञान कराकर दादू दयाल ने सबको मिलजुलकर रहने का संदेश दिया । उनका कहना था अपने देश की भलाई भी इसी में है कि हम द्वेंत या विशमता की भावना न लाते हुए इस प्रकार रहे –

'' भाई रे ऐसा पंथ हमारा ।
द्वै पख रहित पंथ गह पूरा अवरण एक अधारा ।
वाद विवाद काहु सो नाही, माहि जगते न्यारा ।
समदृश्टि सूं भाई सहज मे आपहि आप विचारा ।
मै तै मेरी यह मति नाहिं निरवैरी निरविकारा ।
काम कलपना कदे न कीजे पूरण ब्रम्ह पियारा ।
एहि पथ पहूँचि पार गहि दादू सो तत सहज संभारा ।'' 12

इस प्रकार हम देखते है कि,तत्कालीन परिस्थितियों में जिस जातीय एकता तथा सांस्कृतिक समिश्रण की आवश्यकता थी, वह दादू की वाणी में अनेक रुपों मे प्रस्फुटित हुई है । 13

गुरु नानक देव :–

संत परम्परा में गुरू नानक का नाम एक विशेश महत्व रखता है । कबीर की भाँती इन्हौंने भी अपने धार्मिक उपदेशों से हिन्दू तथा मुसलमानों में अभेद की स्थापना करने का प्रयास किया । इनका विश्वास था कि ईश्वर एक है अलिप्त है, जिसकी प्राप्ती किसी जाती अथवा धर्म विशेश के लिए निश्चित नही । उन्हौने जात पाँत के भेदभाव का निशेध कर एक सच्चे प्रेम के सिद्धान्त पर बल दिया । 14

उन्हौंने सभी बाह्याडम्बरों में औपचारिकताओं का खण्डन करके स्वतः कोई ऐसे औपचारिक बंधन नहीं रखें, जिन्हे अपनाने के लिए किसी भी मानव को कश्ट हो या वे किसी धर्म की मान्यताओं के प्रतिकूल हो। इसलिए उनका धर्म ''मानवधर्म'' बनकर विकसित हुआ । 15

गुरुनानकजी ने कही भी अवतारवाद या मूर्तिपूजा को महत्व नही दिया । अपने घट के भीतर निवास करनेवाले ब्रम्ह को न पहचानकर शास्त्र और ज्ञान में उलझे रहनेवाले पंडितों से गुरूनानकजी कहते है –

'' जै कारणि तटी तीरथ जाही । रतन पदारथ घट ही माही
पढि पढि पंडित वादू बखाणे । भीतर होही वसतुन जाणे ।
पंडित पाये जोइसी नित पडहि पुराणा,
अंतरि वसतु न जाणनी घटि ब्रम्ह लुकाणा ।'' 16

इस प्रकार हम देखते है कि गुरुनानकजी ने समाज में सभी दृश्टियों से फैली विश्रंखलता को अपने नैतिक बल से दूर करने का प्रयास किया । 17

संत पलटूदास :–

संत पलटूदासजी भी सोये हुये समाज को, जनता को जगाने का प्रयास अपनी और से किया । अन्य संतो के समान जनता को जागृत करने का कार्य उन्होंने किया ।

संत परम्परा को चिरकाल तक बनाए रखने का श्रेय संत पलटूदास को भी दिया जा सकता है । कबीर तथा अन्य संतो की भाँति इन्हौंने भी बाह्याडम्बर, तीर्थ, व्रत, दान आदि का खण्डन करते हुए तथा हिन्दू मुसलमानों के झगडों का निशेध करते हुए दोनो में भाईचारे के भाव लाने में अन्त तक प्रयत्नशील रहे । इन्हौंने भगवान की अभेद्यता का उपदेश देते हूए कहा –

'' पुरब में राम है पश्चिम खुदाय है,
उत्तर औ दक्खिन कहो कौन रहता ।''

हिन्दू और मुसलमान में तो बस फर्क इतना ही है कि एक कुरान पढता है तो दूसरा पुराण, एक रहीम को याद करता है, दूसरा राम को जबकि दोनों ही एक है –

'' मुसलमान मुसहफ को बाचे, हिन्दू वेद पुराणा हो ।
बन्दगी एक दुइ राह बताया, वही राम रहिमाना हो ।'' 18

संत पलटूदास ने जनता को भक्ति का मार्ग दिखाने के साथ–साथ इस ओर भी पुरा ध्यान दिया था की, भक्ति के क्षेत्र में कही भी जनता जप–तप आदि के चंगुल में न फंस जाए । इसलिए उन्हौंने जप–तप आदि का निशेध करते हुए कहा–

"जप तप ज्ञान वैराग जोग ना मानिहों ।
सरग नरक बैकुण्ठ तुच्छ सब जानिहौ ।" 19

पत्थर की पूजा करनेवाली अन्धविश्वासी जनता को आत्मा की पूजा करने का उपदेश देते हूए संत पलटूदास कहते है –

'' जल पशान को छोडि कै पूजो आतम देव ।
पूजौ आतम देव खाय और बोलै भाई ।
छाती दैके पाँव पत्थर की मुरति बनावे ।
ताहि धोय अन्हवाय विजन लै भोग लगाई ।
साक्षात भगवान द्वार से भूखा जाई ।
काह लिये बैराग झूँठ के बांधे बाना ।
भाव भक्ति की मरम है काई बिरले जाने ।
पलटू दोऊ कर जोरि के गुरु संग्न को सेंव ।
जल परवान को छोडि कै पूजो आत्म देव ।'' 20

पलटूदास किसी के पक्षपाती नही थे, न जाति के न विशेश धर्म और न विशेश व्यक्ति के। उनकी दृश्टी समदर्शिनी थी और ये चाहते थे कि हर स्थान पर धर्म में समाज में या अन्य स्थलों पर सबको एक दृश्टीसे देखा जाए । इस भाव के कारण इन्हौंने किसी धर्म के मूलरूप की निन्दा नही की। इन्हौने एक ' मानव धर्म ' का संदेश दिया ।

इन सारे संन्तो के अलावा मलुकदास, गोविंदसिंह, धर्मदास, सुंदरदास आदि संन्तों ने भी समाज को अपने विचारों से जागृत करने का कार्य किया है । उन्हौंने भी मूर्तीपूजा, बाह्यडम्बर, अन्धविश्वास का डटकर मुकाबला किया और लोगों को समाज को इनसे सजग करने का प्रयत्न किया ।

इस प्रकार सभी संन्तो ने अपने अमूल्य विचारों से समाज में चेतना निर्माण की, सोये हुये समाज को अपने विचारों व्दारा जागृत करने का प्रयास किया लोंगो का समझाया की यह भेद उपरी तौर पर है हम सब तो एक ही है । और इन्हौने केवल एक ही धर्म को माना और वह है ' मानव धर्म ' इस प्रकार सभी सन्तों ने अपने जीवनभर लोंगो में चेतना लाने का प्रयत्न किया ।

संदर्भ सूची :–

01. हिंदी साहित्यका इतिहास – शिवनारायण प्रसाद पृ. 98
11. वही, पृ.81
02. हिंदी प्रगतिशील कविता – डॉ. सलमाखान पृ.73
12. वही, पृ.81

03. वही, पृ.73
04. वही, पृ.75
05. वही, पृ.78
06. वही, पृ.78
07. वही, पृ.79
08. वही, पृ.79
09. वही, पृ.79
10. वही, पृ.80
13. वही, पृ.81
14. वही, पृ.76
15. वही, पृ.76
16. वही, पृ.76
17. वही, पृ.77
18. वही, पृ.82
19. वही, पृ.82
20. वही, पृ.83